और इस्लाम के दाएरे में आ जाते हैं।

''जोरास्टर के तन्त्र (सिसटम) से ज़्यादा शुद्ध, मूसा के कानून से ज़्यादा छूट हमें मुहम्मद के धर्म में मिलती है। जिसमें हर चीज़ के पीछे कोई वजह (कारण) है और कोई अनधिवश्वास नहीं है। जिससे सातवीं शताब्दी में ईसा मसीह की दी हुई सीखों का अपमान किा गया था।''

''मध्यकाल में फैला हुआ इस्लाम आधुनिक तकनीक और नये पिरवर्तनों पर आधारित था। इस्लाम में लोगों का इल्मी स्तर शिक्षा स्तर यूरोप के लोगों से बढ़ा दिया। इस्लाम ने ग्रीस (देशों का नाम) की संस्कृति सभ्यता का समांगीकरण (प्रत्येक भाग बराबर किया) किया कि आज हमें ग्रीस की कई सांस्कृतिक किताबें अरबी में मिलती हैं। इस्लाम ने पवन चक्की, त्रिकोमिती (गणित का एक भाग) आधुनिक पाल नौका (जिसके पाल ४५ के कोण पर रहते हैं) ईजाद (आविष्कार) किया। और धातुकर्म, यान्त्रिक और रासायनिक अभियान्त्रिकी और खेती के आधुनिक तरीके बताए। मध्यकाल में तकनीक को इस्लाम से युरोप हासिल कर रहा था ना कि यूरोप से इस्लाम। केवल पन्द्रहवी शताब्दी के बाद तिनके के बहाव की दिश के बहाव की दिशा बदल गई।

''मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि औरत को इस्लाम में ईसाई धर्म से ज़्यादा छूट है। औरत इस्लाम में ज़्यादा सुरक्षित है बनिस्बत (तुलना में) उस धर्म में जिसमें एक औरत से शादी करना बताया जाता है। कुरान में औरत के लिए क़ानूनों में ज़्यादा रिआयत है। अभी सिर्फ बीस साल पहले ईसाई इंग्लैण्ड में औरत का जायदाद (सम्पत्ति) हर हक़ पहचाना गया है। जबकि इस्लाम में इस पहले ही स्पष्ट रूप से प्रस्तावित कर दिया था।

इसलाम के बारे में ग़ैर मुसिलमों का नज़रिया।

इसलाम के बारे में ग़ैर मुसिलमों का नज़रिया।

''न्याय इस्लाम का का सबसे उत्तम आधार है क्योंकि जैसे-जैसे म कुरआन पढ़ती हूँ वैसे - वैसे मुझे जीवन के लिए नायाब उसूलों की प्रप्ति होती है जिससे सारी दुनिया की रोज़ाना ज़िन्दगी में उद्धार होसकता है।

यह पहला ऐसा मज़हब है जो एकता और भेदभाव के खिलाफ खड़ा है। क्योंकि जब मस्जिदसे नामाज़ के लिए दिन में पाँच बार सब लोगों इकट्ठा किया जाता है। तब चाहे राजा हो या किसान सब एक साथ अपना सर ईश्वर के सामने झुकाकर कहते है. ''हे ईश्वर तू ही सबसे महान है।'' मैं इस्लाम की एकता नुमा स्वभाव के बारे में जानकर आश्चर्यचकित (हैरान) हो गई। जो एक आदमी को दूसरे आदमी को अपना भाई समझने पर मजबूर कर देता है।''

''जात-पात के भेदभाव को जड़ से ख़त्म करके इस्लाम को सबसे हटकर विजय प्राप्त हुई है। जबिक दुनिया में आज इस्लाम की इसी खूबी का प्रचार करके जांत-पांत को खत्म किया जा रहा है।''

''मैं मुस्लमान नहं हूँ वास्तिवक तौर पर फिर भी मैं खुद को मुस्लमान समझता हूँ क्योंकि मैं खुदा के सामने सर झुका चुका हूँ। औरयह मानता हूँ कि कुरान और दूसरी इस्लामिक किताबें जिसमें इस्लाम के दूसरे नजिरये हैं वह ईश्वरीय सत्य का खज़ाना है। जिससे अभी हमें काफी कुछ सीख लेना है और इस्लाम बेशक।

''हमारा यह मानना है कि सन् ६९९ से १०० ई. तक काला युग, कंता मकमेब्द था। यह इस बात को प्रकट करता है कि हमने पश्चिमि यूरोप, भारत से स्पेन तक इस्लामिक समाज खूबसूरती से पनप रहा था। ईसाई राज्य ने इस्लाम के फैलाने के दौरान (समय में) काफी कुछ खोया मगर इसके विपरीत हम यह सोचते हैं कि पिश्चमी यूरोपीय सभ्यता एक सम्पूर्ण सभ्यता है मगर यह गलत ख्याल है।''

''मगर इस्लाम के नियम (उसूल) मानवता के कर्तव्य है। इस्लाम पूर्वी देशों में युरोप से ज़्यादा समाजिक दुनिया पैदा करने ैर भाचारा फैलाने में कामयाब रहा। किसी दूसरे समाज की विजय का ऐसा इतनी शिक्त (ताक़त) है कि जांत - पांत का भेद - भाव जो अभी भी समाज मैं फैला है उसे ख़त्म कर दे। पूर्वी और पश्चिमी देशों में जो पर्सपर विरोधभास (इख्तेलाफ) है बगैर इस्लाम की मदद से उसे नहीं ख़त्म किया जा सकता। इस्लाम के हाथों में यूरोप और पूर्वी देशों के बीच ख़राब सम्बन्धों का समाधान (हल) है।

मुहम्मद मुस्तफा (स.अ.) ने औरतों का मर्तबा (महत्व) बढ़ाया यह एक ना झुठलाई जाने वाली सच्चाई है। कोई दूसरा मज़हब इस्लाम की तरह तेज़ी से नहीं फैला। इस्लाम के बारे में पश्चिमी नज़रिया यह है कि इस्लाम के बारे में पश्चिमी नज़रिया यह है कि इस्लाम को तलवार के दम पर फैलाया गया मगर कोई शिक्षाविद् इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। मगर कुरान इस बात को स्पष्ट करता है कि किसी व्यक्ति को ज़बरदस्ती (बल पूर्वक) इस्लाम मानने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता।

''मैं मानता हूँ कि खुदा एक है और मुहम्मद (स.अ.) उनके रसूल हैं। यह बहुत आसान और न बदलने वाला कलमा (बात) है। जिससे आदमी इस्लाम के दाएरे में आता है। इस्लाम में जिसकी पूजा की जाती है यानी 'खुदा' के लिए कोई मुर्ति मौजूद नहीं है। रसूल की इज़्ज़त रखने वाले उनकी (मुहम्मद) को ज़िन्दगी के तौर-तरीके को अपनाकर फाएदे